



बढ़ते कदम

वर्ष-14
अंक-11
2016

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी



यादों के गलियारे से

हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित संकल्प दिवस एवं राजभाषा प्रदर्शनी के कुछ अविस्मरणीय दृश्य



विषय वस्तु

प्रसंगवश—	
—रामाशीष सिंह —	3
मंडल की उपलब्धियां	4
साक्षात्कार—	
— डेजी सरकार	5
मनुष्य की संवेदना —	
— गोपाल कृष्ण दास	6
संस्कृति और भाषा—	
— पूजा कुमारी	7
ट्वीटर...	
— विनोद कुमार त्रिपाठी	8
जरा हंसिए	
— प्रियंका पाण्डेय	9
क्षणिकाएं	
— रीतेश कुमार शर्मा	10
नाव की किस्मत	
— निरंजन कुमार	10
फटाफट क्रिकेट	
— निलेश कुमार —	11
सत्यजीत राय...	
— सुनील तिवारी	13
अधिकारी का अधिकार —	
— सच्चिदानंद जिज्ञासु	14
राजभाषा समारोह	
— इन्द्रज्योति राय	16
कुछ बातें	
— नूर फातिमा	18
गंगा और मानव	
— धर्मेन्द्र कुमार सिन्हा	18
विद्यार्थी	
— जनार्दन प्रसाद	18
छाया समाचार	19
चित्र वीथिका	20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पूर्व रेलवे/मालदा
फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)

Email – Rajbhasha.malda@gmail.com
Web: www.ier.indianrailway.gov.in

शांतिनिकेतन की होली



होली रंगों का त्योहार होने के साथ दिलों को जोड़ने वाला पर्व भी है। होली के दिन लोग आपस के गिले शिकवे भूलकर प्रेम व सौहार्द के साथ मेल का यह त्योहार मनाते हैं। देश के विभिन्न हिस्से में होली अलग अलग नामों से मनायी जाती है। बंगाल में होली का त्योहार **दोल जात्रा** या दोल उत्सव के नाम से होली के एक दिन पहले मनाया जाता है। इस दिन महिलाएँ लाल किनारी वाली पारंपरिक सफ़ेद साड़ी पहन कर शंख बजाते हुए राधा-कृष्ण की पूजा करती हैं और प्रभात-फेरी का आयोजन करती हैं। इसमें गाजे-बाजे के साथ, कीर्तन और गीत गाए जाते हैं। दोल शब्द का मतलब झूला होता है। झूले पर राधा-कृष्ण की मूर्ति रख कर महिलाएँ भक्ति गीत गाती हैं और उनकी पूजा करती हैं। इस दिन अबीर और रंगों से होली खेली जाती है। इस दोल यात्रा में चैतन्य महाप्रभु द्वारा रचित कृष्ण-भक्ति संगीत की प्रचुरता रहती है। प्राचीन काल में इस अवसर पर ज़मींदारों की हवेलियों के प्रवेशद्वार को आम लोगों के लिए खोल दिया जाता था। उन हवेलियों में स्थापित राधा-कृष्ण के मंदिर में पूजा-अर्चना और भोग की रस्म होती थी। समय बीतने के साथ अब यह परंपरा लगभग बंद हो गयी है। अब न तो ज़मींदार हैं न उनकी वो शानो शौकत।

बंगाल में होली का जिक्र हो और शांतिनिकेतन की होली की चर्चा न ऐसा हो नहीं सकता है। कविगुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर ने वर्षों पहले वहाँ बसंत उत्सव की जो परंपरा शुरू की थी, वो आज भी वैसी ही है जैसी गुरुदेव के समय हुआ करती थी। विश्वभारती विश्वविद्यालय परिसर में छात्र और छात्राएँ आज भी पारंपरिक तरीके से होली मनाती हैं। लड़कियाँ लाल किनारे वाली पीली साड़ी में होती हैं। और लड़के सफ़ेद धोती और कुर्ता पहनते हैं। वहाँ इस आयोजन को देखने के लिए बंगाल ही नहीं, बल्कि देश के दूसरे हिस्सों और विदेशों तक से भी भारी भीड़ उमड़ती है। इस मौके पर विश्वविद्यालय के छात्र एक जुलूस की शकल में रंग, अबीर और पलाश के फूलों से होली खेलते हुए विश्वविद्यालय परिसर की परिक्रमा करते हैं। इसमें अध्यापक भी शामिल होते हैं। रवीन्द्रनाथ की प्रतिमा के पास इस उत्सव का समापन होता है। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते हैं। शांतिनिकेतन के साथ साथ कोलकाता-स्थित रवीन्द्रनाथ के पैतृक आवास, जोड़ासांको में भी बसंत उत्सव आयोजित होता है।

-- रामाशीष सिंह

निःशुल्क वितरण हेतु

संरक्षक	परामर्श	प्रधान संपादक	संपादक	कार्यकारी संपादक	सहयोग
राजेश अर्गल मंडल रेल प्रबंधक	सुब्रतो सरकार अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक	रामाशीष सिंह राजभाषा अधिकारी (प्र.)	सच्चिदानंद क. अनुवादक	इंद्र ज्योति राय क. अनुवादक	दयामय दास, कनिष्ठ इंजीनियर निलेश कुमार, एएलपी

राजभाषा की प्रगति

- ⇒ दिनांक 26.02.2016 को राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह, सांस्कृतिक कार्यक्रम व कवि सम्मेलन का आयोजन मालदा में किया गया। वर्ष 2015 में हिंदी में अधिकाधिक कार्य संपन्न करने के लिए 59 कर्मचारियों और 5 अधिकारियों को व्यक्तिगत नगद पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। क क्षेत्र से कल्याण चक स्टेशन और मुख्य यार्ड मास्टर कार्यालय जमालपुर और ग क्षेत्र से वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी कार्यालय मालदा को हिंदी में ही अधिकाधिक कार्य संपन्न करने के लिए सामूहिक नगद पुरस्कार एवम ट्रॉफी व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। वर्ष 2015 में राजभाषा विभाग मालदा के द्वारा राजभाषा सप्ताह के दौरान कुल 9 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था इन प्रतियोगिताओं में सफल कुल 54 प्रतिभागियों को मंडल रेल प्रबंधक मालदा के द्वारा पुरस्कृत किया गया गत हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी में शामिल विभागों को भी नगद पुरस्कार प्रदान किए गये।
- ⇒ जमालपुर स्टेशन पर दस दिवसीय हिंदी कार्यशाला की समाप्ति पर सफल प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गये।

जागरूकता अभियान

- ⇒ विश्व कैंसर दिवस और विश्व कुष्ठ रोग दिवस पर एक संगोष्ठी का आयोजन मंडल रेल अस्पताल में किया गया। इस संगोष्ठी के माध्यम से रेलवे कर्मचारियों और आम जनता के बीच कुष्ठ के विभिन्न प्रकारों, उनके लक्षणों और उनसे बचाव के उपाय के बारे में प्रकाश डाला गया। इस संगोष्ठी के माध्यम से लोगों के बीच यह जानकारी प्रदान की गई कि कुष्ठ रोग छूने से नहीं होता। इसके साथ ही इस संगोष्ठी में कैंसर के विभिन्न प्रकार के बारे में भी जानकारी प्रदान की गई जैसे प्रोस्टेट कैंसर, स्तन कैंसर, मुंह का कैंसर आदि। इस संगोष्ठी में कुल 150 कर्मचारियों के बीच जागरूकता फैलाई गई।
- ⇒ मनीग्राम और गनकर स्टेशनों के बीच समपार फाटक संख्या 12/ सी-टी पर दुर्घटना के समय त्वरित बचाव व राहत कारवाई सुनिश्चित करने के लिए रेलवे कर्मचारियों के बीच एक छद्म अभ्यास का आयोजन किया गया।
- ⇒ दिनांक 18/2/2016 और 19/2/2016 को मंडल ट्रेनिंग स्कूल में प्राथमिक उपचार विषय पर एक संरक्षा सेमिनार का आयोजन किया गया।

यात्री सुविधाओं का विस्तार

- ⇒ मनीग्राम स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या दो और तीन को 200 मीटर तक बढ़ाया गया।
- ⇒ भागलपुर स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या चार पर वासिंग पिट का निर्माण किया गया।
- ⇒ जमालपुर स्टेशन पर कुल अदद 20, गौड़ मालदा में 3, खालतीपुर में 4, चामा ग्राम में 3, भागलपुर में 12 और सुलतानगंज स्टेशन पर कुल 14 पीने के पानी के नलों की व्यवस्था की गई।
- ⇒ बड़हरवा स्टेशन, तीन पहाड़ और राजमहल स्टेशनों पर कुल मिलाकर 258 मीटर पाइपलाइन बिछाया गया।
- ⇒ मालदा टाउन एरिया के सर्वमंगला पल्ली में रेलवे के अनारक्षित टिकट प्रणाली के लिंक को सुधारा गया।
- ⇒ मालदा टाउन स्टेशन के नवनिर्मित पैदल ऊपरी पुल संख्या 3 के लिए विद्युत व्यवस्था सुधारने हेतु 28 वाट के 21 टी-5 फीटिंग लगाए गए।
- ⇒ रतनपुर व अकबरनगर में अवाध रूप से विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए 7.50 किलो वाट क्षमता के डीजी सेट की व्यवस्था की गई।
- ⇒ बाराहाट-बांका सेक्शन में मुररहा स्टेशन पर नये पैनल इंटरलाकिंग ब्लाक सेक्शन को चालू किया गया।

अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री सुब्रतो सरकार का डेजी सरकार विश्वास द्वारा हिन्दी मासिक पत्रिका बढ़ते कदम के लिए की गई एक भेंट वार्ता



1.प्र:- एक सफल अपर मंडल रेल प्रबंधक के पद पर मालदा में कार्य करते हुए आपको कैसा लगता है ?

उ:- अभी तो मेरा बस 2 महीने ही हुआ है एवं यहां काम करते हुए बहुत ही अच्छा लग रहा है। यहां के स्टाफ, सुपरवाइजर, ऑफिसर सभी बहुत ही अच्छे हैं, बहुत ही सहयोगी हैं। मुझे यहां कोई तकलीफ नहीं है।

2.प्र:- हावड़ा, सियालदह मंडलों में दो-दो अपर मंडल रेल प्रबंधक कार्यरत हैं लेकिन मालदा में अपर मंडल रेल प्रबंधक का केवल एक ही पद है जिससे कार्य का अत्यधिक दबाव आपके ऊपर पड़ता है। ऐसी स्थिति में आप अपने को कैसे समायोजित कर पाते हैं?

उ:- मालदा हावड़ा और सियालदह की तुलना में छोटा मंडल है तथा वहां बहुत सारी उपनगरीय ट्रेनें चलती हैं इसके चलते वहां काम का दबाव अधिक है। यहां का कार्यभार संभालने के लिए एक अपर मंडल रेल प्रबंधक काफ़ी है। इसीलिए बड़े-बड़े स्टेशनों जैसे हावड़ा, सियालदह, दिल्ली आदि में दो- दो अपर मंडल रेल प्रबंधक हैं।

3.प्र:- जन परिवाद निवारण के लिए मंडल में आपको नामित किया गया है — क्या कोई ऐसी शिकायत आपको मिली है जिसमें निर्णय लेना कठिन लगा हो ?

उ:- अभी तक ऐसी कोई परिस्थिति या ऐसा कोई केस मेरी दृष्टि में नहीं आया है।

4.प्र:- मालदा मंडल में गाड़ियों के परिचालन को अधिक उपयोगी तथा सार्थक बनाने के लिए क्या आपकी कोई विशेष कार्य योजना हैं, अगर हाँ तो क्या ? इस विषय में कुछ बताइए।

उ:- इस विषय में मैं मानता हूँ कि सबसे पहले समय पालन पर ध्यान दिया जाना चाहिए जिससे गाड़ियां अपने निर्धारित समय पर चलें ताकि यात्रियों को तकलीफ न हो। दूसरा यात्रियों को सुविधाएं मिलनी चाहिए जैसे स्टेशन, ट्रेन, ट्रेन -शौचालय आदि को साफ-सुथरा रखना, खानपान सेवा ठीक करना तथा उसकी क्वालिटी आदि नियंत्रित रखना।

5.प्र:- क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि मालदा मंडल के गाड़ियों के परिचालन को सुधारने के लिए कंट्रोल को और अधिक सुधारने तथा अत्याधुनिक बनाने की आवश्यकता है ? अगर इस तरह की स्थिति है तो आपके द्वारा क्या पहल किया जा रहा है ?

कंट्रोल को हम मंडल का दिल कह सकते हैं, उसे आधुनिकीकरण करना आवश्यक है। इस क्षेत्र में हमारी कोशिशें जारी हैं। कंट्रोल एक ऐसी जगह है जहां 24 घंटे काम होता है। इसलिए कंट्रोल या वहां काम करने वाले लोगों के लिए सुविधाओं के बारे में विचार-विमर्श चल रहा है ताकि इसे एक मॉडल कंट्रोल बनाया जा सके।

6.प्र:- मालदा मंडल में आप अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी का भी दायित्व संभाल रहे हैं। मंडल में राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु अपने विचार व्यक्त करें।

मालदा मंडल 3 राज्यों में विस्तारित है बंगाल, झारखंड और बिहार एवं मंडल का अधिकांश क्षेत्र झारखंड या बिहार में है जहां हिंदी का प्रयोग सबसे ज्यादा होता है। इसलिए हमारा यह प्रयास रहता है कि ऑफिस के अधिक से अधिक काम हिंदी में ही हो। मेरा स्वयं का विचार है कि जब भी मैं लोगों से बातचीत करू तो हिंदी में ही करू कारण हिंदी बहुत ही मधुर भाषा है। अंग्रेजी में बातें करने पर हम अपने दिल की बात ठीक ढंग से व्यक्त नहीं कर सकते क्योंकि इसमें डिस्टेंस महसूस होता है एवं बातचीत फॉर्मल हो जाती है। हिंदी एक ऐसी भाषा है जो सबको मालूम है, एक 5 साल का बच्चा भी काफ़ी खूबसूरती से हिंदी बोल लेता है। बंगाल में ही बहुत सारे ऐसे लोग हैं जिन्हें बांग्ला नहीं आता पर हिंदी अच्छी तरह से आती है। हिंदी से मधुर भाषा और कोई नहीं है।

7.प्र:- मालदा मंडल में आप ने शीघ्र ही कार्यभार ग्रहण किया है, मालदा के प्रति आप अपने उद्गार कैसे व्यक्त करना चाहेंगे ?

मालदा मुझे बहुत ही अच्छा लग रहा है। इसका एक और भी कारण है वह है जमालपुर जो कि मालदा मंडल के अंतर्गत ही आता है, मैं वहीं से 4 साल स्पेशल क्लास रेलवे अपॉर्टिस कर के आया हूँ। मैं जहां से पास किया हूँ उसी मंडल में अपर मंडल रेल प्रबंधक बनकर आया हूँ। यह बहुत ही आनंद देता है

8.प्र:- नौकरी के बाद के समय का उपयोग आप कैसे करते हैं — कुछ बताइए। क्या आपकी साहित्य, संगीत या कला के क्षेत्र में भी कोई रुचि है — यदि है तो किसमें और आप उसके लिए क्या करते हैं ?

उ:- मेरी रुचि सबसे ज्यादा किताब पढ़ने में है। मुझे नावेल, टेक्निकल लिटरेचर, ज्ञान बढ़ाने वाली किताबें, हिंदी की किताबें, पत्र पत्रिकाएं आदि पढ़ने में अच्छा लगता है।

9.प्र:- मंडल में इतने बड़े पद को संभाल रहे हैं आप अपनी शिक्षा- दीक्षा तथा कामयाबी एवं इस ऊंचाई तक आप कैसे पहुंचे कुछ बताइए।

उ:- मैं ऊंचाई पर हूँ यह कभी नहीं सोचता। खुद को मैं एक स्टॉफ ही सोचता हूँ। वैसे तो माता-पिता या घरवालों का बहुत ही सहयोग मुझे मिला है परंतु मेरे जीवन के इस पथ पर मैं कुछ ऐसे व्यक्तियों से भी मिला हूँ जिनसे मुझे आगे बढ़ने तथा यहां तक पहुंचने की प्रेरणा मिली है उनमें से कुछ नाम उल्लेखनीय है। श्री चैन सुख जिंगर, निवर्तमान अमरेप्र/विशाखापट्टनम, श्री जी. डी. ब्रह्मा, निवर्तमान अमरेप्र/खुर्दा रोड तथा तीसरे है श्री राजेश अर्गल मरेप्र/मालदा। वैसे तो कई और लोग भी हैं लेकिन इनके काम करने की जो स्टाइल है वह मुझे बहुत ही प्रेरित करती है। ये तीनों मेरे जीवन में मील के पत्थर हैं।

10.प्र:- किसी व्यक्ति को जीवन में सफलता पाने के लिए क्या करना चाहिए ?

उ:- जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए 5 बातें महत्वपूर्ण हैं जिनमें 1. सकारात्मक सोच, 2. निष्ठा, 3. ईमानदारी, 4. ज्ञान, 5. सह-अनुभूति शामिल है।



मनुष्य की संवेदना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणि होने के साथ-साथ एक बेहद संवेदनशील प्राणि है। मनुष्य ही एक ऐसा जीव है जिसे अच्छे बुरे का ज्ञान होता है। ईश्वर ने तो पूरी सृष्टि की रचना की है परंतु उनकी सृष्टि में सबसे खूबसूरत चीज मनुष्य है। मानव अपने जीवन में जो कुछ पाने की इच्छा रखता है उसके लिए पहले एक योजना तैयार करता है, तब उस योजना को पूरा करने के लिए कार्य प्रारंभ करता है। चाहे उसकी इच्छा अच्छे काम के लिए हो या बुरे काम के लिए।

कहा जाता है कि मनुष्य ही समाज का निर्माता है, मनुष्य से ही एक अच्छे समाज का निर्माण होता है। सबसे पहले अपने परिवार से लिया जाय तो देखा यह जाता है कि हर मनुष्य की इच्छा होती है कि उसे समाज में सर्वश्रेष्ठ माना जाय। इस लिए वह अपने बच्चों को हमेशा ऐसी शिक्षा देना चाहता है कि उसका बच्चा अच्छी योग्यता प्राप्त करें और अपने घर के साथ-साथ समाज में अपना नाम रौशन करें। लेकिन साथ ही समाज में कुछ ऐसे भी मनुष्य होते हैं जो अपने बुरे कामों से समाज में अपना जलवा बनाना चाहते हैं।

इस बारे में मेरा मानना है कि मनुष्य जन्म से ही संवेदनशील होता है। बच्चा जब जन्म लेता है तो घर में खुशियां मनाई जाती हैं। मिठाइयाँ बाँटी जाती हैं। मनुष्य उस बच्चे के साथ अपना भविष्य जोड़ लेता है और उसे अपने स्तर से ज्यादा कर उसे आगे बढ़ाने की ओर अग्रसर हो जाता है। मनुष्य के उस प्रयास के साथ बच्चा भी उसके बताए हुए रास्ते पर चलने का प्रयास करने लगता है। कुछ इसमें सफल हो जाते हैं, कुछ बीच में ही भटक जाते हैं। परंतु मनुष्य की संवेदना ऐसी है कि कुछ भटक जाने के बाद भी अपने सही रास्ते पर लौट आते हैं और पुनः भविष्य के निर्माण में लग जाते हैं। लेकिन जो भटक जाने के बाद अपराध की दुनिया में चले जाते हैं उनका जल्दी लौटना संभव नहीं होता है क्योंकि उनकी कोमल संवेदना का स्थान कठोर संवेदना ने ग्रहण कर लिया होता है।

मनुष्यों कुछ ही ऐसे होते हैं जो अपनी संवेदना को निस्वार्थ भाव से काम में लगाते हैं, कुछ ऐसे भी मानव होते हैं जो अपनी संवेदना केवल अपने लिए महसूस करते हैं। परंतु केवल अपना विकास ही यथेष्ट नहीं है। ये सारी संवेदनाएं के आज अर्थ के युग में केवल अर्थहीन होकर रह गई हैं अर्थात् जीना मात्र रह गया है। मनुष्य आज यह नहीं सोचता है कि संतुष्टि और प्रेम से बढ़कर कुछ नहीं होता। अगर मनुष्य संतुष्ट होकर अपना कार्य निष्पादित करे तो निश्चय ही सामाज में शांति और विकास का संदेश लाएगा।

परंतु इन सबसे ऊपर प्रेम है जैसा कि मेरा मानना है प्रेम एक ऐसी चीज है जो किसी बाजार या दुकान में नहीं मिलता। यह मनुष्य को सबसे बड़ी संवेदना है। प्रेम से मनुष्य सब पर विजय प्राप्त कर सकता है और विकास के साथ-साथ शांति कायम कर सकता है। कहा जाता है, जहां प्रेम है वहां सब का बास होता है। ईश्वर भी उसी का साथ देता है जो प्रेम से ईश्वर के समीप जाता है। प्रेम चाहे किसी के साथ हो यह सदैव पवित्र होता है, इसमें कोई स्वार्थ नहीं होता। कोई भी स्थान हो चाहे वह घर हो, समाज हो, कार्यालय हो, सभी जगह प्रेम की आवश्यकता होती है। जहाँ प्रेम होता है वहाँ कठिन से कठिन काम आसान हो जाता है।

मनुष्य के संवेदना से ही आज दुनिया ने इतना विकास किया है। संवेदना से ही इतनी बड़ी सभ्यता का विकास हुआ और इतनी सारी भाषाएँ बनी है। इस प्रकार यह समझा जा सकता है कि मनुष्य की संवेदना के कारण ही जीव मंडल में मनुष्य को श्रेष्ठ माना गया है। इसके द्वारा ही मनुष्यों में भाईचारे की भावना पैदा होती है समाज में सद्भाव पैदा होता है। इसलिए संवेदनाओं के सही विकास के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

— गोपाल कृष्ण दास

संस्कृति और भाषा

जब से इंसान ने एक दूसरे को समझना शुरू किया तभी से उसने भाषा के महत्व को भी समझा और जाना है। किसी भी समाज की संस्कृति और सभ्यता की जान उसकी भाषा होती है। किसी भाषा का खत्म होना, उस समाज का वजूद मिट जाना है, उस समाज की संस्कृति और सभ्यता का इतिहास के पन्नों में सिमट जाना है। इंसान के आधुनिक होने में उसकी भाषा का सबसे बड़ा योगदान है, क्योंकि इसके जरिये ही वह अपनी बात दूसरों तक पहुंचाता है। लेखन के आविष्कार का श्रेय 4000 ईस्वी पूर्व में मेसापोटामिया के सूमेरियनों को जाता है। लेकिन अफसोस की बात है कि आधुनिकता की अंधी दौड़ में इंसान अपनी मातृभाषा को ही भूलता चला गया। आज दुनिया भर में हजारों भाषाएं अपना अस्तित्व खोने के कगार पर पहुंच गईं।

यूनेस्को की रिपोर्ट एटलस ऑफ वर्ल्ड्स लार्जैस्ट लैंग्वेज इन डेंजर-2009 में कहा गया है कि मौजूदा सभी भाषाओं में से तक्ररीबन 90 फीसदी भाषाएं अगले 100 बरसों में अपना वजूद खो सकती हैं। दुनिया की तक्ररीबन 97 फीसदी आबादी इनमें से सिर्फ चार फीसदी भाषाएं बोलती है। एक अंदाज के मुताबिक, दुनिया भर में 8000 भाषाएं बोली जाती हैं। इनमें से 6500 भाषाओं की हालत बेहद चिंताजनक है। ये वह भाषाएं हैं, जो पूरी तरह से खत्म हो जाएंगी। दुनिया भर में 178 भाषाएं ऐसी हैं जिन्हें बोलने वाले लोगों की संख्या 150 से कम है।

जिन देशों में भाषाएं खतरे में हैं, उनमें भारत शीर्ष पर है। यहां तक्ररीबन 196 भाषाएं दम तोड़ रही हैं। भारत के बाद अमेरिका दूसरे स्थान पर है, जहां भाषाओं की हालत चिंताजनक है। अमेरिका में 192 भाषाएं लुप्त होने के कगार पर पहुंच चुकी हैं। तीसरे स्थान पर इंडोनेशिया है, जहां 147 भाषाएं अपना वजूद खो रही हैं। दुनियाभर में 199 भाषाएं ऐसी हैं, जिन्हें एक दर्जन से भी कम लोग बोलते हैं। इनमें कैरेम भी एक ऐसी ही भाषा है, जिसे उक्रेन के सिर्फ छह लोग ही बोलते हैं।

पिछले एक दशक में भाषाओं की हालत बेहद गंभीर होती चली गई है। दुनिया में चीनी भाषा बोलने वाली आबादी सबसे ज्यादा है। परन्तु हाल में ही हुए अनुसंधान एवं शोध कार्यों के उपरांत यह तथ्य सामने आया है कि पूरी दुनिया में अब चीनी भाषा का स्थान पर हिन्दी शीर्ष पर काबिज हो चुकी है। इसकी सिर्फ आधिकारिक घोषणा होनी ही बाकी है।

भारत में खत्म होने वाली भाषाओं में से ज्यादातर क्षेत्रीय और जनजातीय बोलियां हैं। फरवरी 2010 में अंडमान निकोबार द्वीप समूह की तक्ररीबन 70 हजार साल से बोली जाने वाली एक आदिवासी भाषा का अस्तित्व खत्म हो गया। इसी के साथ इस समाज की संस्कृति और सभ्यता भी खत्म हो गई। ग्रेट अंडमान में कुल 10 मूल आदिवासी समुदायों में से एक बो समुदाय के आखिरी सदस्य ने 2004 की सुनामी में अपना घरबार खो दिया था।

भारत के हिमालयी राज्यों हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और उत्तराखंड आदि में तक्ररीबन 44 भाषाएं-बोलियां ऐसी हैं, जो जनजीवन से गायब हो रही हैं, जबकि ओडिसा, झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल में ऐसी तक्ररीबन 42 भाषाएं खत्म हो रही हैं। 1961 की जनगणना के मुताबिक, भारत में 1652 भाषाएं थीं, जो 2001 में घटकर महज 234 ही रह गईं। पिछले चार दशक में भारत में 1418 भाषाएं लुप्त हो चुकी हैं।

2001 की जनगणना के मुताबिक, भारत में तक्ररीबन 450 ऐसी भाषाएं हैं, जिनके बोलने वालों की तादाद दस हजार से भी कम है। बदलते वक्त के साथ ये भाषाएं अपना अस्तित्व खो रही हैं। दुनिया भर में सिर्फ 65 भाषाएं ही ऐसी हैं, जिन्हें एक करोड़ से ज्यादा लोग बोलचाल में इस्तेमाल करते हैं। इनमें 11 भारतीय भाषाएं भी शामिल हैं। इनमें से एक भाषा हिंदी भी है। हिन्दी को भारत की राजभाषा स्वीकार किया गया है। संविधान में यह भी कहा गया है कि यह केंद्र का दायित्व है कि वह हिंदी के विकास के लिए निरंतर प्रयास करे। विभिन्नताओं से भरे भारतीय परिवेश में हिंदी को जनभावनाओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनाया जाए।

ट्वीटर एक आधुनिक संचार तंत्र

माइक्रो ब्लॉगिंग साइट की ट्वीटर निशुल्क सेवा है जिसकी स्थापना 21 मार्च 2006 को इवान विलियम्स, नोह ग्लास, जैक डर्शी और ब्रिज स्टोने ने की थी। इसका मुख्यालय अमेरिका के कैलिफोर्निया में है। जस्ट सेटिंग माय ट्वीटर नाम के साथ इसकी शुरुआत की गई थी। शुरुआत में इसे स्टेट.अस का नाम दिया गया था जिसे बाद में बदलकर ट्वीटर कर दिया गया। इसे शुरू करने का मकसद एसएमएस को नया और असरदार रूप देना तथा एसएमएस को इंटरनेट के जरिए निःशुल्क भेजे जाने की व्यवस्था करना था। इस वजह से ट्वीटर के भीतर लिखने के लिए अक्षरों की सीमा 140 कैरेक्टर निर्धारित की गई। यह ध्यान देने की बात है कि कैरेक्टर अक्षर नहीं होते हैं बल्कि किसी भाषा को लिखने के लिए जितने भी आवश्यक संकेत होते हैं उन्हें कैरेक्टर के नाम से जाना जाता है। अंग्रेजी या हिंदी के 140 कैरेक्टरों से औसतन 20 शब्द बनते हैं जिसे एक सशक्त शुरुआती विचार को व्यक्त करने के लिए पर्याप्त माना जाता है।

ट्वीटर के जरिए यह आसानी से पता लगाया जा सकता है कि कोई व्यक्ति किसी असल में क्या कार्य कर रहा है और अपनी सक्रियता को किस दिशा में मोड़ कर तत्काल कार्य कर सकता है। इस पर उपलब्ध कई सुविधाओं का इस्तेमाल व्यक्ति विशेष के अलावे भारत समेत कई देशों के सरकारी संगठन, राजनीतिक पार्टियां, समाचार एजेंसी, मीडिया और अन्य समूह कर रहे हैं। जब लोगों को विभिन्न आयोजनों की सूचनाएं प्रदान करना मुख्य होता है तब इसके प्रयोग से काफी सुविधा मिलती है।

प्रमुख व्यक्ति जैसे अमिताभ बच्चन, शाहरुख खान, सचिन तेंदुलकर, सानिया मिर्जा, ओबामा, नरेंद्र मोदी आदि लोगो का ट्वीटर पसंदीदा मंच बन चुका है जिस पर वह अपने विचार को अभिव्यक्त करते हैं। आज ट्वीटर दुनिया की 32 से अधिक भाषाओं में उपलब्ध है और रोजाना 20 करोड़ से 32 करोड़ यूजर ट्वीटर के जरिए 50 करोड़ से ज्यादा ट्वीट करते हैं।

लोकप्रियता के आधार पर इसकी रैंकिंग 26 है। सुरक्षा के दृष्टिकोण से इसके इस्तेमाल में उपयोग किए जाने वाले पासवर्ड में 370 अक्षरों की मनाही है। इनमें से 12345 और अंग्रेजी के पासवर्ड जैसे शब्दों के पासवर्ड देने या इस्तेमाल करने की रोक है। सामान्यतः हम किसी ई मेल वेबसाइट आदि में जिस तरह का पासवर्ड प्रयोग में लाते हैं उससे थोड़ा भिन्न रूप इसमें पासवर्ड बनाने के लिए है।

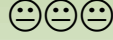
किसी भी ट्वीट को पसंद या नापसंद करने के लिए चिह्न के रूप में बटन को हटाकर दिल जैसा संकेत दिया गया है। ट्वीटर के भीतर एक बाय बटन दिया गया है जिसके इस्तेमाल द्वारा खरीदारी की जा सकती है और अलग से ऑफलाइन भुगतान भी किया जा सकता है। यह सुविधा लॉकअप के साथ साझेदारी में मिली है। गूगल मैप का उपयोग विक्रेताओं को सूचित करने के लिए भी किया जाता है। ऑपरेटिंग सिस्टम एंड्रॉयड पर जिस तरह विडियो चल सकता है ठीक वैसे ही इस पर उसकी भी सुविधा है। यद्यपि ये सब चलाने से स्मार्ट फोन की बैटरी और डाटा पर इसका असर पड़ता है। ट्वीटर इस्तेमाल करने वालों को फेक यूजर सर्च के जरिए नकली पतों का पता चल जाता है।

ट्वीटर के जरिये आप अपने किसी भी चहेते या महान हस्ती के ट्वीट एक ही प्लेटफार्म पर पढ़ सकते हैं। अभी हाल ही में इसमें नये फीचर की शुरुआत की गई है जिससे सीधे संदेश के मामले में 140 शब्दों की समय सीमा खत्म हो गई है। इसके चलते अब इससे लंबे-लंबे संदेशों को भी भेजा जा सकता है। आजकल भारत में ट्वीटर त्वरित रूप से न्याय पाने, अपना संदेश भेजने और त्वरित कार्रवाई हेतु बड़े धड़ल्ले से प्रयोग किया जा रहा है।

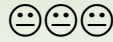
— विनोद कुमार त्रिपाठी

जरा हंसिए तो

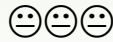
इंजीनियरिंग का फार्म भरते समय छात्र ने पास खड़े चौकीदार से पूछा, — कैसा है यह कॉलेज ?
चौकीदार — बहुत बढ़िया है ! हमने भी यहीं से इंजीनियरिंग की है ।



कल पप्पू ने एक बच्चे से पूछा — बेटे, पढ़ाई कैसी चल रही है ?
उस ने जवाब दिया — अंकल समंदर जितना सिलेबस है, नदी जितना पढ़ पाते हैं, बाल्टी जितना याद होता है, गिलास भर लिख पाते हैं, चुल्लू भर नंबर आते हैं, उसमें डूब कर मर जाते हैं ।



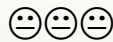
शादी के 5 साल बाद वैलेंटाइन डे के दिन पति अपनी बीवी के लिए सफ़ेद गुलाब का फूल लाया
बीवी ने पूछा — यह क्या सफ़ेद गुलाब ? वैलेंटाइन डे के दिन तो लाल गुलाब देते हैं ना ... ।
पति — अब जिंदगी में प्यार से ज्यादा शांति की जरूरत है, इसीलिए सफ़ेद गुलाब ।



पति अपने मैरिज सर्टिफिकेट को घंटों से देख रहा था ।
बीबी— एक घंटे से आप इस मैरिज सर्टिफिकेट में क्या देख रहे हो ?
पति — एक्सपायरी डेट ढूँढ रहा था पर कोर्ट ने लिखा ही नहीं ।



पप्पू एक दिन अपने दोस्त के घर गया दोस्त की बीबी को देखकर बोला— तेरी और भाभी की जोड़ी तो राम सीता की जोड़ी है ।
दोस्त— कहां यार, न तो ये धरती में समाती है न तो इसे कोई रावण ही ले जाता है ।



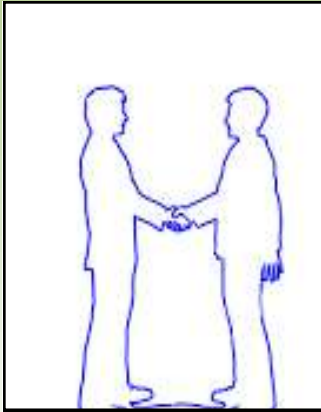
एक गुजराती बादाम बेच रहा था । सरदार ने पूछा— ये क्या है ? इसे खाने क्या होता है ?
गुजराती — यह बादाम है और इसे खाने से दिमाग तेज होता है ।
सरदार— कैसे ?
गुजराती — अच्छा ये बताओ, एक किलो चावल में कितने दाने होते हैं ।
सरदार— पता नहीं ।
गुजराती ने उसे बादाम खिलाया और बोला — अब बताओ एक दर्जन में कितने केले होते हैं ?
सरदार— बारह ।
गुजराती— देखा, दिमाग तेज हो गया न ।
सरदार— दो किलो दे दे यार बड़ी कमाल की चीज है ।

— प्रियंका पाण्डेय

प्रयत्न करना अपने वश में है पर उसका परिणाम अपने हाथ में नहीं है ।
— गीता सार

क्षणिकाएं

लोग आते हैं
लोग जाते हैं
कुछ राह में छूट कर
सब से बिछड़ जाते हैं



आदमी खुदा बन सकता है
तिनका हवा का रुख मोड़ सकता है
जमीन पर आसमान समा सकता है पर
तमस प्रकाश को जीत नहीं सकता है

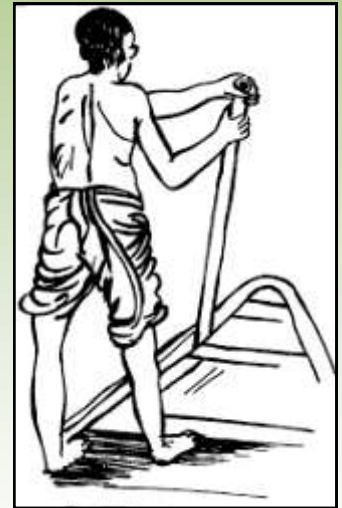
वे कहते थे हमें दोस्त अपना
पर दोस्ती नहीं थी हमसे
जब भी हम ने हाथ बढ़ाया
दामन बचा लिया हमसे

टूटते सितारों को देखकर
लोग मांगते दुआएं हैं
जमीं पर रहने वाले लोग भी
आसमां में घर बनाए हैं
रात के घने अंधेरे में भी दिखता है
सुबह के उजाले में भी अंधेरा रहता है
पर सुबह से शाम तक
आदमी ही क्यों परेशां परेशां रहता है।

— रीतेश कुमार शर्मा

नाव की किस्मत

नदी के किनारे पर
खड़ी एक नाव थी
जब तक बंधी थी
उस किनारे पर
उसकी नजर थी
खुल गई है नाव अब
चलती चली जा रही है
जल्दी ही पहुंचेगी
ऐसा सोचती है



नाविक ने उसे घुमा है दिया
पता नहीं क्यों
अब लौट चली है नाव
क्योंकि उसने अपनी किस्मत
नाविक के हाथों में दे दी है

— निरंजन कुमार

आपका अतीत
कितना भी कटु
रहा हो आप
हमेशा नई
शुरुआत कर
सकते हैं।

— तथागत



फटाफट क्रिकेट का रोमांच

टेस्ट क्रिकेट की लंबी अवधि और सात घंटे से ज्यादा चलने वाले वनडे मैच को लेकर अक्सर क्रिकेट की आलोचना होती थी। इसी से निपटने के लिए और क्रिकेट की तरफ लोगों को फिर से आकर्षित करने के लिए फटाफट 20-20 क्रिकेट अस्तित्व में आया। स्थिति है कि आज पूरी दुनिया पर 20-20 क्रिकेट का जादू सर चढ़ कर बोल रहा है।



फटाफट क्रिकेट के इतिहास पर नजर डाले तो यह 1998 से शुरू हुई जब क्रिकेट के छोटे फॉर्मेट पर इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड के बीच मंथन चल रहा था। क्रिकेट की लोकप्रियता घट रही थी। क्रिकेट से जुड़े अधिकारियों ने एक ऐसा तरीका निकाला जिस से युवाओं को क्रिकेट के बीच फिर से लोकप्रिय बनाया जा सके। इसी समय इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड के मार्केटिंग मैनेजर स्टुवर्ट राबर्टसन ने 2001 में 20-20 ओवर के मैच की बात कही थी। इस फॉर्मेट को अपनाने के लिए मतदान का सहारा भी लेना पड़ा था। स्टुवर्ट राबर्टसन को 20-20 फॉर्मेट के क्रिकेट का जनक कहा जाता है।

पहला 20-20 मैच 15 जुलाई 2004 को इंग्लैंड में मिडिल सेक्स और सरे के बीच क्रिकेट का मक्का कहे जाने वाले लार्ड्स मैदान पर खेला गया था। इस मैच को देखने के लिए भारी संख्या में दर्शक आये। इसके बाद से ही पूरे विश्व में फटाफट क्रिकेट की गूंज सुनाई देने लगी। एक तरफ 20-20 क्रिकेट मशहूर हो रहा था लेकिन इसके विरोध में आवाज भी उठ रही थी। कुछ आलोचकों ने इसे क्रिकेट को दफनाने वाला कदम भी कहा था। लेकिन धीरे-धीरे ऐसा दौर आया जब

पूरी दुनिया में इसकी स्वीकार्यता बढ़ने लगी। विश्व क्रिकेट परिषद ने 20-20 विश्व कप का टूर्नामेंट आयोजित करना सन 2007 में आरंभ किया। सन 2007 में दक्षिण अफ्रीका में पहला 20-20 विश्व कप खेला गया था, जिसमें भारत ने पाकिस्तान को 5 रन से हराकर 20-20 विश्व कप फॉर्मेट का पहला खिताब अपने नाम कर लिया। उसके बाद से अब तक यह सिलसिला लगातार जारी है। लगातार जारी है सन 2010 में तीसरा विश्व कप खेला गया था जिसमें इंग्लैंड में बाजी मारी।



20-20 क्रिकेट से भारत भी अछूता नहीं रहा था और भारत में भी क्रिकेट के कर्णधारों ने इस फॉर्मेट को अपना कर इंडियन प्रीमियर लीग की शुरुआत की। क्रिकेट के फटाफट प्रारूप यानी ट्वेंटी ट्वेंटी पर आधारित प्रतियोगिता इंडियन प्रीमियर लीग या आईपीएल की शुरुआत 2008 में हुई और अपनी वाणिज्यिक सफलता व लोकप्रियता के

बलबूते पर यह दुनिया का प्रमुख क्रिकेट आयोजन बन गया। अब तक आठ आईपीएल हो चुकी हैं। 2015 में इसका

आठवां संस्करण खेला गया जिसमें मुंबई इंडियंस विजेता रही। इसका आयोजन भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड या बीसीसीआई करता है। इनमें से कोलकाता नाइटराइडर्स, मुंबई इंडियंस व चेन्नई सुपर किंग्स ने दो दो बार, राजस्थान रायल्स व डेक्कन चार्जर्स ने एक एक बार प्रतियोगिता जीती है।

पहली आईपीएल शेन वार्न की अगुवाई वाली राजस्थान रायल्स ने जीती थी जबकि 2015 में मुंबई इंडियंस विजेता रही। क्रिकेट की दुनिया में इंडियन प्रीमियर लीग की शुरुआत एक अहम मोड़ थी। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड बीसीसीआई ने धूम-धड़ाके से आईपीएल को 14 सितंबर 2007 को शुरुआत की। ट्वेन्टी-20 के प्रति भारतीय क्रिकेट बोर्ड का प्रेम उस समय जगा जब भारत ने 2007 में ट्वेन्टी-20 विश्व कप में खिताबी जीत हासिल की। प्रतियोगिता कठिन



थी लेकिन कप्तान महेंद्र सिंह धोनी की कप्तानी में टी-20 क्रिकेट वर्ल्ड कप के पहले संस्करण में टीम को जीत मिली।

हर जीत की तरह इस जीत के साथ एक नए अध्याय की शुरुआत हुई। भारत में वैसे भी क्रिकेट का एक अलग मुकाम है और इस जीत के बाद यहां भी टी-20 क्रिकेट की लोकप्रियता बढ़ने लगी। इसके बाद क्रिकेट की आर्थिक महाशक्ति इसका अर्थशास्त्र भी समझने लगी। बीसीसीआई ने इस लोकप्रियता को व्यर्थ न जाने दिया और आईपीएल की शुरुआत हुई। जिसमें बीसीसीआई ने अन्य देशों की ट्वेन्टी-20 प्रतियोगिता की चैम्पियन टीमों को दावत दी। आज स्थिति यह है कि सभी लोग फटा फट क्रिकेट का मजा लेना चाहते हैं। कंपनियां इन आयोजनों पर जी भर कर पैसा लगाती हैं क्योंकि उन्हें पता है की पूरे विश्व में अगर कोई खेल उनके पैसे को एक महीने की छोटी सी अवधि में दस गुना कर सकता है तो वह है फटाफट क्रिकेट। इंग्लैंड से शुरू हुआ फटाफट क्रिकेट का यह सफर आज पूरे विश्व को रोमांचित कर रहा है। चाहे ऑस्ट्रेलिया में आयोजित की जाने वाली बिग बैश लीग हो या पाकिस्तान में आयोजित की जाने वाली पाकिस्तान प्रीमियर लीग या बांग्लादेश में आयोजित की जाने वाली बांग्लादेश प्रीमियर लीग।

इन सभी क्रिकेट प्रतियोगिताओं का फॉर्मेट छोटा है। अर्थात् फटाफट क्रिकेट, तुरंत मजा, पूरा पैसा वसूल। फटाफट क्रिकेट का परिणाम यह हुआ कि पारंपरिक रूप से सफेद कपड़ों में पूरे पाँच दिनों तक खेले जाने वाले क्रिकेट का खेल सिमटकर महज बीस बीस ओवरों की दो पारियों में अर्थात् चासीस ओवरों का रह गया है।

आज इस फटाफट क्रिकेट में ग्लैमर, इंडस्ट्री, और विज्ञापन कंपनियों का तड़का लगा हुआ है। लोग खचाखच भरी स्टेडियम में अपने मनपसंद टीम को खेलते हुए देखना चाहते हैं। छोटी फॉर्मेट के क्रिकेट में दर्शकों का उन्माद अपने चरम पर होता है। इंग्लैंड से चलता हुआ का यह कारवां क्रिकेट का पर्याय बन गया है। लोग दिनभर की थकान को भूल कर दूधिया रोशनी में खेले जाने वाले फटाफट क्रिकेट का मजा नहीं छोड़ना चाहते। यही कारण है कि आज भारत जैसे विविधता वाले देश में शायद ही ऐसा कोई कोना हो जहां यह आयोजन स्थानीय, राज्य, देश स्तर पर ना हो रहा हो।

— निलेश कुमार

सत्यजित राय बीसवीं शताब्दी के महान फिल्म हस्तियों में से एक थे, जिन्होंने यथार्थवादी धारा की फिल्मों को नई दिशा देने के अलावा साहित्य, चित्रकला जैसी अन्य विधाओं में भी अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। सत्यजित राय प्रमुख रूप से फिल्मों में निर्देशक के रूप में जाने जाते हैं, लेकिन लेखक और साहित्यकार के रूप में भी उन्होंने उल्लेखनीय में ख्याति अर्जित की है।

सत्यजित राय : प्रतिभाशाली फिल्मकार

सत्यजित राय का जन्म 2 मई, 1921 को हुआ और 23 अप्रैल, 1992 तक अपनी जीवन पताका इस धरा पर फहराते रहे। फिल्म निर्माण से संबंधित कई काम खुद ही करते थे। इनमें निर्देशन, छायांकन, पटकथा, पार्श्व संगीत, कला निर्देशन, संपादन आदि शामिल हैं। फिल्मकार के अलावा वह कहानीकार, चित्रकार और फिल्म आलोचक भी थे। सत्यजित राय कथानक लिखने को निर्देशन का अभिन्न अंग मानते थे। सत्यजित राय ने अपने जीवन में 37 फिल्मों का निर्देशन किया, जिनमें फीचर फिल्म, वृत्त चित्र और लघु फिल्म शामिल हैं।

सत्यजित राय की पहली फिल्म 'पाथेर पांचाली' को सर्वोत्तम मानवीय प्रलेख पुरस्कार मिला तथा इसको मिलाकर कुल ग्यारह अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। विश्व में भारतीय फिल्मों को नई पहचान दिलाने वाले सत्यजित राय भारत रत्न (1992) के अतिरिक्त पद्म श्री (1958), पद्म भूषण (1965), पद्म विभूषण (1976) और रेमन मैग्सेसे पुरस्कार (1967) से सम्मानित हैं। विश्व सिनेमा में अभूतपूर्व योगदान के लिए सत्यजित राय को मानद 'ऑस्कर अवॉर्ड' से अलंकृत किया। इसके अलावा उन्होंने और उनके काम ने कुल 32 राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्राप्त किये।

अपने माता-पिता की इकलौती संतान सत्यजित राय के पिता की मृत्यु उस समय हुई जब सत्यजित राय मुश्किल से दो वर्ष के थे। उनका पालन-पोषण उनकी माँ सुप्रभा राय ने अपने भाई के घर में किया। उनकी माँ सधे व्यक्तित्व की स्वामिनी थीं और रवीन्द्रनाथ टैगोर के प्रति काफी श्रद्धावान थीं।

उस समय शांतिनिकेतन साहित्य और कला की नयी भारतीय चेतना के केंद्र के रूप में न केवल देश में बल्कि विश्व भर में चर्चित था। समूचे भारत से छात्र और अध्यापकों यहाँ खींचे चले आते थे। अन्य देशों से भी छात्र यहाँ आते थे और इस तरह एक ऐसी नयी भारतीय संस्कृति के विकास की परिस्थितियाँ निर्मित हो रही थीं जो अपनी स्वयं की परंपराओं पर आधारित थीं। शांतिनिकेतन में सत्यजित राय ने नंदलाल बोस और विनोद बिहारी मुखोपाध्याय जैसे सिद्धहस्त कलाकारों से शिक्षा प्राप्त की।

सत्यजित राय की चर्चित फिल्मों में अपूर संसार', 'देवी', 'चारुलता', 'सोनार किला', 'जय बाबा फेलूनाथ', 'घरे बाहरे' और 'आगंतुक' जैसी प्रसिद्ध और कालजयी फिल्में शामिल हैं। राय ने बांग्ला भाषा के बाल-साहित्य में दो लोकप्रिय चरित्रों की रचना की — गुप्तचर फेलुदा और वैज्ञानिक प्रोफेसर शंकु। इसे इनकी कहानियों में भी देखा जा सकता है — फेलुदा को अक्सर मामले की तह तक जाने के लिए पहेलियाँ सुलझानी पड़ती हैं। राय ने इन कहानियों में अज्ञात और रोमांचक तत्वों को भीतर तक टटोला है जो उनकी फिल्मों में नहीं देखने को मिलता है इनकी लगभग सभी कहानियाँ हिन्दी, अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं।

विश्व के दस फिल्मकारों में शामिल सत्यजित राय ने अपनी किसी भी फिल्म को ऑस्कर की दौड़ में शामिल होने नहीं भेजा। उनकी फिल्म 'पाथेर पांचाली' (1955) और **अपू त्रयी** को दुनिया भर के फिल्म फेस्टिवल्स में सैकड़ों अवॉर्ड मिले हैं। इसके बावजूद 'राय मोशाय' ने ऑस्कर के फेरे नहीं लगाए बल्कि स्वयं ऑस्कर अवॉर्ड 1992 में चल कर कोलकाता आया और विश्व सिनेमा में अभूतपूर्व योगदान के लिए सत्यजित राय को मानद ऑस्कर अवॉर्ड से अलंकृत किया।

अधिकारी का अधिकार

अधिकारी किसे कहते हैं ? जिसके पास अकूत अधिकार हो, पावर हो, जो कर्मचारी को बात-बात पर चार्जसीट दे सकता हो, सस्पेंड कर सकता हो, तबादला कर सकता हो, वेतनवृद्धि रोक सकता हो, डाऊनग्रेड कर सकता हो— ऐसे पावरफुल शक्सीयत को ही अधिकारी कहते हैं। जिसके पास अधिकार नहीं, पावर नहीं, कर्मचारियों पर छड़ी न घुमा सके वह कदापि अधिकारी नहीं हो सकता ! अधिकारी में भी श्रेणी है बन्धु! क्लास वन अधिकारी, क्लास टू अधिकारी! इसमें भी कई भेद-विभेद हैं— जुनियर, सीनियर. एच ओ डी, प्रिंसपल एच ओ डी. आदि-आदि ! इन महाशयों के पास यमराज जैसा पावर होता है। किसी को भी बेमौत दें सकते हैं, इनके कोषभाजन से ही बचने के लिए कर्मचारी या उनके अधीनस्थ अधिकारी तेलमालिश, चमचागिरी करने पर मजबूर होते हैं, जो इस कला में दक्ष नहीं होते या जिन्हें चापलूसी करना पसंद नहीं उन्हें एक स्थान पर टिकने ही नहीं देते। वैसे लोगों को ट्रांसफर आदेश लेकर एक कार्यालय से दूसरे कार्यालय तक खाक छानने में ही उनकी जिन्दगी कट जाती है।

यमराज प्राण हरने, मृत्युदण्ड देने के लिए ही विख्यात हैं, प्राण बचाने के लिए नहीं, ठीक उसी प्रकार हमारे अधिकारी महोदय भी चार्जसीट डेग-डेग पर देने की धमकी देना अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझते हैं। वह अधिकारी ही कैसा जो नित रोज दो चार चार्जसीट कर्मचारियों के नाम न जारी करे, उसे अधिकारी के समाज में दबू, फालतू अधिकारी माना जाता है। जो जितना ज्यादा चार्जसीट या पनिसमेन्ट (दण्ड) कर्मचारियों के नाम जारी करते हैं, वे अधिकारी अधिक योग्य, दक्ष तथा होनहार अधिकारी कहलाते हैं, तभी तो चार्जसीट, वेतनवृद्धि पर रोक, ट्रांसफर, सस्पेंड करने में उन्हें बड़ा मजा आता है। सुना है, अधिकारियों को प्रशिक्षण स्कूलों में यही सब सिखलाया जाता है कि कैसे भय का वातावरण पैदा कर कर्मचारियों से सब मनमुताबिक कार्य करवाना है।

कर्मचारी की सबसे बड़ी पहली कमजोरी है, समय पर कार्यालय में उपस्थित न हो पाना अर्थात् कुछ विलम्ब से आना। कर्मचारी जानबूझकर लेट नहीं आते हैं। बेचारे दूर-दराज से आते हैं उन्हें तैयार होने में परिवार के सभी सदस्यों को अपनी क्षमतानुसार सहयोग करना पड़ता है। पत्नी यदि खाना विलम्ब से बनायेगी तो बेचारा समय पर कैसे तैयार हो पायेगा? समय पर नल में पानी नहीं आया तो बेचारा क्या करे और तो और स्टेशन पर दौड़ते -हाँफते पहुँच भी जाए तो गाड़ी रानी 20-30 मिनट देरी से आती है फिर भला ऑफिस कैसे समय पर आएगा। अगर गाड़ी लेट आयी है कारण अधिकारी महोदय को बतलाया जाए तो रटा रटाया कम्प्यूटर में पहले से फिड किया गया वाक्य कहेंगे- “उससे आगे की गाड़ी से क्यों नहीं आते”? अब इसका क्या जवाब है। कौन बहस कर आफत मोल ले ! जल में रहकर मगर से बैर लेना बुद्धिमानि नहीं सो बेचारा कर्मचारी चुपचाप डांट सुन लेना पसंद कर लेता है।

कर्मचारी की जबरदस्त कमजोरी संख्या-2 के श्रेणी में आता है ‘स्थानान्तरण’। इसके नाम सुनते ही पैरों तले की मिट्टी खिसक जाती है, क्योंकि इससे पूरे परिवार के सदस्य प्रभावित हो जाते हैं। परिवार अनाथ हो जाता है बेचारा कर्मचारी जीते जी विधुर हो जाता है। बाल-बच्चे बिना बाप के हो जाते हैं, यदि 10-20 किलोमीटर दूर स्थानान्तरण हुआ हो तो किसी प्रकार सामंजस्य बैठा लिया जाता है परन्तु यदि हावड़ा के कर्मचारी का मालदह या जमालपुर स्थानान्तरण हो

तो वर्षों से जमी जमायी गृहस्थी ही उजड़ जाती है। अतः स्थानान्तरण जीते जी मौत के समान कर्मचारियों के लिए दुःखदायी होता है। अधिकारी क्या जाने इन दीनहीन अभावी कर्मचारियों के जीवन को उन्हें तो बंगला-गाड़ी, नौकर-चाकर सभी सुविधाएँ साथ-साथ जहाँ जाते हैं मिल जाता है।

मेरे भी कुछ मित्र बन्धु ! बड़े अधिकारी हैं जब मैं उनसे मिलता हूँ तो उनके मन के भावों को थाहने की कोशिश करता हूँ तथा इस नतीजा पर पहुँचता हूँ कि सब अधिकारी एक दूसरे की देखादेखी करते हैं। कोई अधिकारी धड़ाधड़ चार्जसीट कर्मचारियों को जारी कर रहा है, और कोई वर्ष दो वर्ष में भी एक नहीं तो उसे अन्य अधिकारी मरियल अधिकारी कह कर हँसी

उड़ाते हैं; क्या करें उन्हें भी अपनी प्रतिष्ठा रखनी है! अतः मजबूरन चार्जसीट जारी कर अपनी प्रतिष्ठा बचानी होती है तथा वे अपने पुराने साथी पर रोब भी जमाना चाहता है। देखो, मैं तुम्हारे साथ पढ़ता था आज मैं तुम्हारा बा स हूँ और तुम मामूली कर्मचारी हो। उसकी हार्दिक इच्छा सर सर सुनने की रहती है। सर संबोधन सुनने से वे बहुत प्रसन्न होते हैं।

जहाँ तक 10-20 मिनट लेट आने पर उपस्थिति पंजिका में लालपेन से क्रॉस करने में सच पूछिए उन्हें रावड़ी चबाने से कम मजा नहीं आता है। इसके बारे में भी काफी छानबीन करने पर यह निष्कर्ष निकला है कि ऐसा वही अधिकारी करते हैं जो कार्यालय के आस-पास रहते हैं जिन्हें धक्कामार रेलगाड़ी से आने की नौबत नहीं पड़ती है। क्योंकि उन्हें लगता है कि हम एक अधिकारी होकर समय पर आते हैं, 10-12 हजार रुपये क्वाटर भाड़ा देते हैं और ये लोग क्वाटर भाड़ा भी ले रहे हैं और लेट भी आ रहे हैं। यह तुलनात्मक सोच उन्हें ऐसा करने पर मजबूर कर देती है। जो अधिकारी भी अन्य कर्मचारियों के साथ गाड़ी से आते हैं वे गाड़ी की मनोदशा से खुद दो चार होते रहते हैं। अतः वे चुप रहने पर विवश होते हैं।

अधिकारियों के स्वभाव के आधार पर इन्हें तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। पहली श्रेणी के अन्तर्गत आनेवाले अधिकारी को सिर्फ काम प्यारा होता है चाम नहीं अर्थात् सभी काम यथासमय, नियमानुसार हो जो उन्हें पसंद है। दूसरी श्रेणी के अन्तर्गत आनेवाले अधिकारी को कर्मचारी से काम तथा सेवा (चमचागिरी) दोनों पसंद है। तीसरी श्रेणी के अधिकारी को काम नहीं सिर्फ और सिर्फ अपनी तेलमालिस, चमचागिरी और अपना लाभ पसंद है। उन्हें सरकारी काम से कोई विशेष लगाव नहीं बल्कि हर वक्त सर सर कर्मचारियों द्वारा सुनना पसंद है। इसीलिए चालाक कर्मचारी उन्हें हर वक्त घेरे रहते हैं, डेरा पर कर्मचारियों का हुजुम लगा रहता है और कर्मचारी अपने लाभ हेतु हर वक्त अधिकारी महोदय को सरसरते रहते हैं। इसमें दोनों की भलाई ही भलाई है। लेकिन जो कर्मचारी सरसराना नहीं जानते उन्हें अधिकारियों का कोपभाजन बनना होता है। कुछ कर्मचारी भी रसूखवाले होते हैं भले ही वे कोपभाजन बनें पर झुकना, तेलमालिस करना अथवा सर सर कहकर हमेशा सरसराना उन्हें पसंद नहीं। ऐसे कर्मचारी को कष्ट तो होता है पर स्वभिमान की रक्षा कर पाने में सफल होते हैं। ऐसे कर्मचारियों को धन्यवाद!

आपके विचार

बढ़ते कदम के कदम निश्चित ही मालदा मंडल के लिए एक गौरवपूर्ण तथा राजभाषा की दृष्टि से लाभकारी प्रयास है। इसके निरंतर मासिक प्रकाशन से काफी लोकप्रियता एवं मौलिक रूप से हिन्दी में कुछ लिखने के लिए प्रेरणा मिल रही है। हमारा सुझाव है कि चूंकि इसके मुद्रित संस्करण की प्रतियां अत्यंत सीमित हैं जिससे मंडल के तमाम लोगों को नहीं मिल पाती हैं। यदि इसके मुद्रित अंकों को मंडल कार्यालय के सूचना पट्टों पर लगा दिया जाए तो इसका व्यापक प्रचार प्रसार होगा यदि संभव हो तो मंडल के अन्य स्थलों पर भी इसे रखा जाए जिससे इसकी लोकप्रियता बढ़ेगी और लोगों का राजभाषा के प्रति रुझान बढ़ेगा।

—सुधांशु कुमार झा, अनुभाग अधिकारी, पूर्व रेलवे/मालदा

राजभाषा समारोह : एक सिंहावलोकन

मालदा मंडल के राजभाषा विभाग के द्वारा दिनांक 26.02.2016 को राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह, सांस्कृतिक कार्यक्रम व कवि सम्मेलन का आयोजन स्थानीय कालिंद्री भवन में किया गया। इस कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि मंडल रेल प्रबंधक श्री राजेश अर्गल ने दीप प्रज्वलित कर किया। राजभाषा की नोडल कर्मचारी द्वय श्रीमती सुचेता सरीन व सुशीला मोदी ने पुष्प गुच्छ प्रदान कर मंडल रेल प्रबंधक का स्वागत किया।



इस अवसर पर मंडल की मासिक पत्रिका **बढ़ते**

कदम के नवीनतम अंक का विमोचन मंडल रेल प्रबंधक के द्वारा किया गया। राजभाषा विभाग के श्री विनोद कुमार त्रिपाठी ने मालदा मंडल द्वारा राजभाषा में किये गये कार्यों का ब्यौरा प्रस्तुत किया। श्री त्रिपाठी ने बताया कि मंडल रेल प्रबंधक मालदा के नेतृत्व में मालदा मंडल ने राजभाषा के क्षेत्र में सराहनीय प्रगति की है। मंडल के अधिकारियों और कर्मचारियों के मध्य राजभाषा में कार्य करने के प्रति रूचि बढ़ी है। मंडल के विभिन्न स्टेशनों व कार्यालयों में नियमित रूप से कार्यशालाओं के आयोजन से कर्मचारियों में हिंदी में काम करने संबंधी समस्याओं को दूर करने में मदद मिल रही है।

इस आयोजन में मंडल के सभी अधिकारी व कर्मचारी शामिल हुए। समारोह का आरंभ स्वागत गान से हुआ। मंडल



रेल प्रबंधक ने इस अवसर पर एक कवि के रूप एक कविता **बड़ा महत्व है** का पाठ किया। इसके बाद कवि सम्मेलन का विधिवत शुभारंभ आगंतुक कवियों को मंच पर बुला कर गुलाब के फूल से स्वागत किया गया। कवि सम्मेलन में कवियों ने देश भक्ति, भष्टाचार, प्रेम, विरह और हास्य व्यंग्य की एक से बढ़कर एक कविताएं पेश की।

मालदा मंडल के उदियमान कवि पुरषोत्तम राजमणी ने अपनी कविता **गुस्ताखी पाकिस्तान** की सुनाकर श्रोताओं में देश भक्ति का संचार कर दिया। वही वरिष्ठ कवि श्री विजय कुमार ने मंच का संचालन

करते हुए वसंत पर अपनी कविता **ऋतुराज** का पाठ कर उपस्थित समूह को भाव विभोर कर दिया। साहेबगंज से पधारी सुश्री प्रियंका पाण्डेय ने अपनी कविता के माध्यम से समाज में पैसे के महत्व व प्रभाव को दर्शाया। श्रीमती डेजी सरकार विश्वास ने मां के विविध रूपों को अपनी कविता के माध्यम से वाद्य यंत्र के द्वारा नव प्रयोग के रूप में प्रस्तुत किया।

मालदा मंडल के हास्य व्यंग्य कवि बृज मोहन प्रसाद ने अपनी चुटीली कविताओं के माध्यम से वर्तमान व्यवस्था पर कुठाराघात करते हुए दर्शकों को इतना हंसाया कि लोग लोट पोट हो गए। मिर्जा चौकी से पधारे राजेंद्र प्रसाद **नमन**



जी ने अपनी अद्भुत प्रस्तुति से दर्शकों में वीर रस का संचार कर दिया। श्री सत्येंद्र तिवारीजी ने अपनी भावप्रवण कविताओं का पाठ कर लोगों में अद्भुत संवेदना का संचार कर दिया। इसके अलावा श्री उमेश कुमार मोदी, श्री अरुण कुमार झा, श्री विनय कुमार झा, अपनी कविताओं से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कवि सम्मेलन के पश्चात रेल कर्मि श्री मानस मित्रा के नेतृत्व में उनकी मंडली ने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर उपस्थित लोगों का मन मोह लिया। श्रीमती बनानी

मित्रा की गजल प्रस्तुति ने श्रोताओं को झूमने पर मजबूर कर दिया। वही मंडली के द्वारा प्रस्तुत बिहू नृत्य ने कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिये।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के पश्चात पुरस्कार वितरण की शुरुआत सामूहिक नकद पुरस्कार प्रदान कर की गयी। क क्षेत्र से कल्याण चक स्टेशन और मुख्य यार्ड मास्टर कार्यालय जमालपुर और ग क्षेत्र से वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी कार्यालय मालदा को हिंदी में अधिकाधिक कार्य संपन्न करने के लिए सामूहिक नकद पुरस्कार के रूप में 1000 रुपये एवम ट्रॉफी के साथ प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। राजभाषा सप्ताह के दौरान वर्ष 2015 में राजभाषा विभाग मालदा के द्वारा कुल 9 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। इन प्रतियोगिताओं में सफल कुल 54 प्रतिभागियों को मंडल रेल प्रबंधक मालदा के द्वारा पुरस्कृत किया गया। हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी में सफल विभागों को भी नकद पुरस्कार प्रदान किए गये।



हिंदी में प्रशंसनीय कार्यालयी कार्य संपन्न करने के लिए 5 अधिकारियों और 59 कर्मचारियों को व्यक्तिगत नकद पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। अधिकारियों में श्री अशोक कुमार दीक्षित, सहायक कार्मिक अधिकारी, श्री मनीष सहरावत, सहायक मंडल वित्त प्रबंधक, श्री सचिन सुमन, मंडल इंजीनियर, श्री राजीव कुमार, वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर, डीजलशेड जमालपुर और मालदा मंडल के निवर्तमान वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक, श्री नवीन चंद्रा जी को हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए व्यक्तिगत नगद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। इस प्रकार राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह में 118 अधिकारी / कर्मचारियों पुरस्कृत किया गया। मंडल रेल प्रबंधक द्वारा आगंतुक कवियों को शाल प्रदान कर सम्मानित किया गया।

राजभाषा अनुभाग के श्री सच्चिदानंद के द्वारा किए गए धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम के समाप्ति की घोषणा की गई।

-- इंद्रज्योति राय

कुछ बातें

कुछ बातें कह दी जाय तो आफत है
 कुछ बातें न कही जाय तो भी आफत है
 इस दुनिया का तो यही पेशा है
 इसके हालात से लड़ना मुश्किल
 इससे हारना क्यामत है ।
 कुछ बातें दिल के करीब होती हैं
 कुछ बातें दिमाग के करीब होती हैं
 इस दुनिया का तो यही पेशा है
 सुनकर तारीफ दिल में बैठ जाता
 करे निंदा तो फूटी आँखों भी न सुहाता ।
 कुछ बातें सपनों की होती हैं,
 कुछ बातें हकीकत की होती है
 इस दुनिया का तो यही पेशा है
 जो सब छोड़ सिर्फ
 अपने सपनों के लिए काम करे
 वो अंधेरों में देखे गए सपनों को भी
 बना देता उज्ज्वल हकीकत है।

— नूर फातमा

गंगा एवं मानव

गंगोत्री से निकलती है जब गंगा
 रहती है, कितनी निर्मल
 मानव भी लेता है जन्म जब
 रहता है, कितना कोमल

जैसे-जैसे आगे बढ़ती है गंगा
 वैसे-वैसे होती जाती प्रदूषित
 ज्यों-ज्यों मानव होता है बड़ा
 त्यों-त्यों होता जाता कलुषित

अंततः गंगा हो जाती है मैली
 आखरी पड़ाव में
 मानव भी भूल जाता है
 समाजिकता और जीने की शैली ।

— धर्मेन्द्र कुमार सिन्हा

साधना करने से मनुष्य साधक बनता है
 और साधक ही अपने अभीष्ट की
 सिद्धि प्राप्त करता है ।

— शिवसूत्रविमर्शिका

मैं विद्यार्थी न रहा
 एक जाति हो गया हूँ
 हर बात की
 एक वजह हो गया हूँ
 राजनीति से कभी परे नहीं रहा
 हर राजनीतिज्ञ का
 हमसफ़र हो गया हूँ

कभी भी कोई
 हमें कैश कर सकता है

विद्यार्थी

मैं राजनीतिज्ञों का
 एक ट्रंप कार्ड हो गया हूँ
 मुझे जाति से न जानो
 मुझे अंदर से पहचानो
 मेरा मन कुछ करने को है
 इस देश भारत को
 तीन रंगों से भरने को है।

— जनार्दन प्रसाद



छाया समाचार

राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम की कुछ झलकियां



चित्र वीथिका

दिनांक 26.02.2016 को आयोजित राजभाषा पुरस्कार वितरण उद्घाटन समारोह एवं कवि सम्मेलन की कुछ मनभावन झलकियां

